मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 71, अक्टूबर(द्वितीय), 2019

रजनी

(भाग-16)

जनकदेव जनक

गतांक से आगे:

सूर्य की प्रथम सुनहरी किरणें पहाडियों और जंगलों पर अपना सोना लूटा रही थी, जिसका खजाना पाकर प्रकृति रानी मुस्कुरा उठी थी. उस शांत वातावरण में महर्षि जड़ी बूंटियों की खोज में निकल रहे थे. तभी घायल विजय की याद आई. उसके घाव की सफाईकर कुछ जरूरी दवाएं लगाना आवश्यक था, ताकि उसका घाव जल्द ठीक हो सके. उन्होंने एक नजर सोए हुए विजय की ओर देखा और कुटिया की ओर बढ़ गए. किरन अपनी तलहत्थी पर पूजा की थाल लिए हुए निकल रही थी. जिसमें फल, फूल, अक्षत,रोली आदि सामग्री थी. सामने अपने बापू को देखते ही ठमक गई.

“बिटिया, जड़ी बूटी लाने जा रहा हूं. अपने मामू का ख्याल रखना. उनके जगने के बाद नाश्ता करा देना.”
“ठीक है. आप भी जल्द आ जाना. पता नहीं मामू को देखकर मुझे कुछ भय सा लगने लगा है. लगता है उनको खोजते हुए नक्सली यहां कभी भी आ सकते है!”
“मन का बहम है. मैं दोपहर तक आ जाऊंगा, हां, विजय का घाव साफ कर दवा लगा देना.”महर्षि हाथ में कुल्हारी व कुदाल लिए जंगल की ओर निकल पड़े और किरन मंदिर की ओर.

महर्षि विजय के बारे में सोचते हुए तेजी से जंगल में बढ़ते जा रहा थे. उन्हें याद आई, शाम की ढलती बेला थी. चहकती हुई चिड़ियां अपने घोषलों में लौट रही थी. घने बांसवारी में बैठी गौरियों के कलरव से वातावरण गूंजयमान था. धीरे-धीरे अंधकार अपना पैर पसारने लगा था. एक तो जंगल का ऊबर खाबर रास्ता, दूसरे पेड़ों का घना आवरण. इसी दौरान कुछ दूरी पर महर्षि को कोई हिंसक जीव की आकृति दिखाई पड़ी. यकायक उसके पांव ठमक गए. दाहिने हाथ में पकड़े कुल्हाड़ी को और मजबूती के साथ पकड़े लिए. जब वे कुछ और आगे बढ़े तो उन्होंने महसूस किया कि आकृति ज्यों का त्यों है. उसमें किसी तरह की हलचल नहीं है. वे और हिम्मतकर आकृति के पास पहुंचे, जिसे देखने के बाद उनके हाथ से कुल्हाड़ी छूटकर नीचे गिर गई. वह आकृति किसी युवा व्यक्ति की थी जो पानी में भींगी

हुई थी. महर्षि ने उस व्यक्ति को अपने कंधे पर उठाया और आश्रम की ओर तेजी से बढ़ चले.

आश्रम पहुंचने पर उसने अपने कंधे से युवक को नीचे उतारा और उसे देखा. युवक का शरीर रक्त से लाल हो गया था. कई जगह पर कटने और फूटने से रक्त रिस रहा था. कंधे पर लाने से उनका अंग वस्त्र भी खून से लाल हो गया था. युवक का चेहरा पहचान में नहीं आ रहा था. उन्होंने अपनी बिटिया को आवाज लगाई,

"अरे बिटिया रानी, सो गई क्या? उठो."महर्षि ने आवाज लगाई, पर किरन की नींद नहीं खुली. उसने युवक के शरीर पर एक कंबल डाल दिया और खुद अपनी कुटिया की ओर चले गए.

जवानी की नींद अजीबो-गरीब होती है. सो गए तो फिर उठना मुश्किल. महर्षि कुटिया के द्वार पर जाकर उसे जगाया. आलस भरी जम्हाई लेते हुई किरन बोली,

"आई बापू. "

किरन के जगने के बाद महर्षि अपनी समाधि स्थल की ओर चले गए, जहां युवक को कंबल ओढ़ाकर छोड़कर आ गए थे. इधर किरन उठने के बाद खाना और पानी लेकर समाधि स्थल पर गई. लेकिन महर्षि कहीं दिखाई नहीं पड़े. उसने इधर उधर देखा. तभी उसकी नजरें कंबल ओढ़े युवक पर पड़ी.

"उईमां!!!"वह जोरों से चीखी," देखो बापू देखो....वह कौन है?"

"धत्त पगली, वह कोई घायल युवक है जो बीरान जंगल के रास्ते में मिला था सो लेता चला आया."

"क्यों बापू?'

"बस ठीक हो जाएगा, तो वह खुद अपने घर चला जाएगा."

"ओह, अब समझी."

"तुमने खाना खा लिया क्या?"

"हां, बहुत पहले खा चुकी हूं आप खा लीजिए."

"ठीक है, उस दिन जो बूंटी तुम्हें रखने को दी थी, उसे सिलवट पर पीस कर शर्बत की तरह घोलकर लाओ. "

"अभी लाई."बोलकर किरन अपनी कुटिया में दौड़ती हुई चली गई. वह बूंटी खोजने के बाद पत्थर के सिलवट पर उसे लोढ़ा से पीसा. बारीक महीन बनने के बाद उसका शर्बत बनाया और उसे एक तांबे के लोटा में भरकर महर्षि के पास पहुंची. तब तक महर्षि अपना खाना खा लिए थे.

हाथ में दीया लिए दोनों युवक के पास पहुंचे. महर्षि ने युवक के शरीर से कंबल हटाया. दीपक के हल्के पीले प्रकाश में युवक का चेहरा स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था. जिसे देखकर दोनों के मुंह से एक साथ निकल पड़ा,

"विजय ! मामू !"वह घायल युवक कोई और नहीं विजय था, जो महर्षि का साला और किरन का मामा था. दोनों एक टक सजल नेत्रों से विजय को देखते रहे. महर्षि ने धैर्य से काम लिया. सबसे पहले विजय

के गीले वस्त्रों को उसके शरीर से अलग किया. उसके शरीर के जख्मों को किसी तरल पदार्थ से साफ किया. जहां-तहां लाल रक्त सूख गया था. विजय की बाई बांह में केहुंनी के ऊपर दो इंच का लंबा और गहरा जख्म था, जहां से अभी भी रक्त रिसाव हो रहा था. यह दृश्य देखते ही किरन का धैर्य डगमगा गया. वह विजय के सीने पर अपना सिर रखकर रोने लगी. अपने मामू के साथ बचपन में बिताए एक-एक पल उसके जेहन में उतरता जा रहा था, जो उसे रोने पर विवश कर रहा था. उसे रोते हुए देखकर महर्षि ने ढांढ़स बंधाया. कहा,

“रोने से विजय के सेहत पर असर पड़ेगा. तुम्हें साहस और हिम्मत रखने की जरूरत है, जाओ, केतली में पानी गर्म करके लाओ.”

“अभी लाई, बापू.”किरन अपनी आंखों में आए आंसुओं को पोछते हुए कुटिया की ओर भागी. इधर महर्षि विजय के लिए जड़ी-बूंटियों की खोज करने लगे.

इसी दौरान इंस्पेक्टर रवि की तस्वीर उनके मानस पटल पर उभर आई. जब इंस्पेक्टर को उन्होंने युवा अवस्था से लेकर अब तक की अपनी आपबीती सुनाई थी.

कहा था कि वे एक मित्र प्रताप सिंह के साथ अवैध रूप से कोल मार्चेंट का काम करते थे. इस कार्य में प्रताप सिंह देश-विदेश के तस्करों का सहयोग लेता था. तभी इंस्पेक्टर रवि ने पूरी कहानी विस्तार से कहने का आग्रह किया था.

महर्षि ने बताया कि कोलकाता स्थित हुगली नदी के तट पर दोनों का संयुक्त फ्लैट था. जहां से कच्चा माल पानी जहाज से विदेश भेजने और लाने का कार्य होता था. कारोबार रानीगंज और झरिया कोल फील्ड के कोल माफियाओं से मिलकर अच्छा चल रहा था. केंद्र व राज्य सरकार के कोल सचिव और कोयला मंत्री तक पहुंच थी. सरकार बंद खदानों को निजी कंपनियो को आउटसोर्सिंग चलाने के लिए दे दिया था. 8-10 ओपेन कास्ट प्रोजेक्टों में कोयला उत्खनन मशीनों से होता था. जहां का कोयला हम लेते थे. कभी-कभी ट्रकों को स्थानीय असंगठित मजदूरों से लोड कराते थे, जबकि अक्सर मशीनों से कोयला लोड होता. स्थानीय कोयला चोर, प्रशासन, सीआइएसएफ जवान और नेताओं की मिली भगत से करोडों का माल लाखों में मिल जाता था. इस कारोबार में नीचे से लेकर ऊपर तक के ऑफसरों का पैसा बंधा हुआ था. जिन्हें हर माह ‘मंथली’ भेज दिया जाता था.

एक दिन पांच लाख के इनामी नक्सली साधु भैया का फोन आया. कहा कि मेरा आदमी कोयला खरीदने जा रहा है. उसे दो करोड़ का लेवी भेज देना. किसी तरह की चालबाजी नहीं होनी चाहिए. अगर कुछ गड़बड़झाला हुआ तो जानते ही हो हम क्या सजा देते हैं. फिर क्या था. लेवी साधु भैया को भेजना पड़ा. इस तरह के नक्सली व अन्य संगठनें जबरन हमारा आर्थिक शोषण करती रही.

इस कार्य में हर जगह खतरा ही खतरा था. न दिन में चैन न था और न रात को नींद आती. भागम भाग की जिंदगी से जी ऊब गया था.

तब इंस्पेक्टर ने पूछा,"उसके बाद काम छोड़ दिया क्या?"
"नहीं सर, काम नहीं छोड़ा. एक दिन अपने गांव चला गया. सारा कारोबार मित्र प्रताप सिंह देख रहा था.

एक माह बाद जब गांव से वापस लौट तो सबकुछ बदला-बदला सा था. फ्लैट छोड़कर प्रताप सिंह गायब था. उसका मोबाइल, ईमेल, व्हाट्सअप आदि सारे जन संचार के माध्यम बंद थे. लाख कोशिश के बावजूद उसके बारे में जान नहीं सका.

अचानक प्रताप सिंह के गायब होने से मै तो कंगाल हो गया. मेरे साथ उसने विश्वासघात किया. कई कंपनियों में जाकर कैश के बारे में पता किया तो मालूम हुआ कि प्रताप सिंह एक माह पूर्व ही उठा लिया था. कई स्थानों से तो वह एडवांश राशि भी ले लिया था. वैसे कारोबारी मुझे और प्रताप सिंह को ढूढंते फिर रहे थे. ऐसी स्थिति में कोलकाता से भागकर अपने गांव चला गया. वही अपने भाई के साथ अबरख कां धंधा करने लगा. इस धंधे में दो तीन वर्ष बीत गए. कारोबार ठीक चल निकला था कि एक हादसा हो गया.

एक दिन अपने कमरे में पहुंचा. अचानक लकड़बग्घा ने मेरे ऊपर छलांग लगा दिया. उसके अकस्मात हमला से नीचे गिर गया. कैसे बेहोश हो गया, पता नहीं चल पाया. जब होश आया तो अपने को पहाड़ी घाटियों में पाया.

घाटियों में इधर उधर देखा. वह नक्सलियों का अड्डा था. निजी सेना की चौकसी में मुझे रखा गया था. जहां लकड़बग्घा के सैकड़ों खाल धूप में सूखने के लिए डाला गया था. अब मुझे समझ में आ गया था कि हमला करने वाला कोई असली लकड़बग्घा नहीं,बल्कि उसकी खाल में कोई व्यक्ति था, जिसने जमीन पर गिरने के साथ ही क्लोरोफॉर्म सूंघाकर मुझे बेहोश कर दिया था.

रात होने पर मुझे नक्सली सरगना के समक्ष प्रस्तुत किया गया. जब मेरे आंखों पर बंधी काली पट्टी को खोलकर हटाया गया तो सामने अपने मित्र प्रताप सिंह को देखा. मेरी खुशी की सीमा न रहा. उससे मिलने के लिए जैसे ही आगे बढ़ा. तभी उसने मेरे सीने पर एक बूट जोर से मारा. जिससे मैं गिरते-गिरते बचा. हिम्मत कर उससे पूछा,
"अरे मित्र, मैं तुम्हारा दोस्त चंद्रकांत सिंह हूं. पहचाना नहीं, किस गलती की सजा दे रहे हो?"
"खबरदार, मैं तेरा दोस्त नहीं दुश्मन हूं. तू मेरा राजदार है. मैं तुम्हें जान से मार दूंगा, ताकि मेरा राजदार दफन हो जाए. "
"मुझे छोड़ दो, तुम अपना काम करो, मैं अपना काम करूंगा. तुम्हारा राज किसी को कानोकान खबर नहीं होगी. "
"मुझे कच्चा खिलाड़ी समझा है क्या? जब तक तेरी जान के साथ तेरे पूरे खानदान का खत्मा नहीं कर दूंगा , तब तक चैन से नहीं बैठूंगा. "प्रताप सिंह दहाड़ा, "सैनिकों इसे बंधक बनाकर तहखाना में डाल दो."

मुझे बंधक बनाकर एक तहखाने में रख दिया गया. इस दौरान प्रताप सिंह मुझसे मिलने आता और मेरी पिटाई कराता. मेरे चिल्लाने और तड़पने पर खूब अट्टहास करता. एक रात खाना खाने के लिए बंधन मुक्त किया गया. उसी समय प्रहरी लघुशंका करने चला गया. बस क्या था, पलक झपकते वहां से भाग निकला और इसी आश्रम में आकर शरण लिया.

भेष बदलकर महर्षि दयानंद टोप्पो से साथ रहने लगा, जो जड़ी बूटियों से बीमार आदिवासियों की सेवा करते थे. उनके निधन के बाद आदिवासी समाज ने मुझे उनके स्थान पर महर्षि बना दिया और मंदिर में उनकी समाधि पर ध्यानमग्न रहने लगा.

“बापू, हल्का गर्म पानी से मामू का जख्म साफ कर दिया है. उस पर बूंटी का लेप चढ़ाओ....” विजय के जख्मों की सफाई करती किरन ने अपने बापू को आवाज लगाई. बेटी की आवाज उनके कोनों में पड़ते ही महर्षि की भंगिमा भंग हो गई. वे विजय की ओर देखे और उसके पास पहुंचे.

क्रमश:

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें